*Quest Journals*
*Journal of Research in Humanities and Social Science*
*Volume 11 ~ Issue 4 (2023) pp: 110-113*
*ISSN(Online):2321-9467*
www.questjournals.org

**Research Paper**

# "आधुनिक युग में बच्चों की शिक्षा में माता-पिता एवं परिवार की भूमिका"

SYEDA ASIFA PERVIN JEELANI
*TGT – HINDI*
*AL-BARKAAT SCHOOL, ALIGARH*

*Received 01 Apr., 2023; Revised 09 Apr., 2023; Accepted 11 Apr., 2023 © The author(s) 2023. Published with open access at www.questjournals.org*

**सार-**

प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय तक शिक्षा का अपना विशेष महत्व रहा है। शिक्षा के द्वारा ही प्रत्येक समाज एवं राष्ट्र आदि के विकास को गति प्रदान की जा सकती है। प्रत्येक समाज एवं व्यक्तियों के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा के द्वारा समाज और व्यक्तियों को उन्नति के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है तथा बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के उपकरण एवं संस्थाएं अपनी-अपनी भूमिका एवं योगदान देती हैं। लेकिन इस कार्य में उनके माता-पिता और अभिभावकों की भूमिका को विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जा सकता है, क्योंकि बच्चों की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। उसके सीखने के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं और उसकी जीवन को एक नई दिशा एवं और प्रदान करते हैं वर्तमान समय में जहां एक और शिक्षा के क्षेत्र का विस्तार एवं विकास हुआ है, वही बच्चों और उनकी शिक्षा में उनके माता-पिता और अभिभावकों की भूमिका का काफी विस्तार हुआ है। यही विस्तार बच्चों की शिक्षा व्यक्तित्व और भविष्य को उज्जवल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती हैं। शिक्षा जन्मजात शक्तियों के विकास, ज्ञान, कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार को परिवर्तित करने का मुख्य साधन है। इसके द्वारा व्यक्ति व बच्चा प्रगतिशील पथ की ओर अग्रसर होता हैं। शिक्षा बालक की बौद्धिकता, तर्कशक्ति, कुशलता, मूल्यों, रूचियों और कौशल क्षमता का विकास करती है। अतः शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। इसमें राज्य, विद्यालय, माता-पिता, समाज, समुदाय, वर्ग, संरक्षक आदि अपना-अपना दायित्व निभाते हैं। यह सभी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में एक दूसरे से संबंधित होते हैं तथा अपना योगदान देते हैं। बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है। बालक परिवार से ही समाज में स्वयं को समायोजित करना सीखता है। इसके बाद विद्यालय में आकर औपचारिक तौर पर ज्ञान प्राप्त करता है। परिवार और विद्यालय एवं बच्चे के बीच माता-पिता एक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं। बालक विद्यालय आकर अपने को अनुशासन में रखना सीखता है। बालक की ज्ञान अर्जन में उसके साथी, शिक्षक, वातावरण इत्यादि का बहुत महत्व होता है। शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास का मुख्य स्त्रोत है।

## *-बच्चों की शिक्षा में माता-पिता एवं अभिभावकों की आवश्यकता एवं महत्व-

बच्चों की शिक्षा में उनके माता-पिता एवं उनके परिवार की आवश्यकता एवं महत्व को नकारा नहीं जा सकता। बच्चों में सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक मूल्यों के विकास के लिए माता-पिता की अहम भूमिका होती है। बच्चों को समाज तथा सामाजिक वातावरण के साथ समायोजन करने की प्रक्रिया सिखाने में माता-पिता अति आवश्यक होते हैं। बच्चों ने सामाजिक व्यवहार एवं सामाजिक आचरण की

शिक्षा भी माता-पिता के द्वारा ही दी जाती है। बच्चों में मूल प्रवृत्तियों, रूचियों कौशलों एवं दक्षताओं के विकास में भी परिवार मुख्य भूमिका निभाता है। बच्चों में भाषा से संबंधित विभिन्न कौशलों के विकास एवं शब्द भंडार में वृद्धि करने में परिवार का मुख्य भूमिका होती है। कोई भी बच्चा उच्च शैक्षणिक उत्कृष्टता स्तर को तभी प्राप्त कर सकता है जब उसे परिवार का पूरा समर्थन मिले। तभी बच्चा अपनी शिक्षा सफलता पूर्वक प्राप्त कर सकता है। बच्चे को शिक्षा के लिए तैयार करना, उसे प्रोत्साहित करना तथा विभिन्न प्रकार की रचनात्मक एवं सामाजिक शक्तियों तथा विभिन्न प्रकार की रचनात्मक एवं समाज विकास में माता-पिता की आवश्यकता होती है। बच्चों में समाज और सामाजिक जिम्मेदारी तथा समाज के प्रति जो उनके कर्तव्य होते हैं, उनका ज्ञान परिवार से ही बच्चा सीखता है । बच्चे को शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक विकास करने में तथा उनमें नागरिकता के उत्तम गुणों का विकास करने में माता पिता और उनके परिवार का योगदान महत्वपूर्ण होता है। बच्चों में व्यवसायिक ज्ञान तथा कुशलता प्रदान करने तथा आंतरिक गुणों और उनके व्यक्तित्व के विकास में माता पिता और उनके परिवार का अधिक प्रभाव बच्चे के व्यक्तित्व पर पड़ता है। बच्चों में सकारात्मक दृष्टिकोण एवं उनका चारित्रिक, आध्यात्मिक विकास में माता-पिता और उसके परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों को सीखने से संबंधित विभिन्न प्रकार के कार्यों एवं क्रियाकलापों में से संबंधित विभिन्न उपकरणों संसाधनों की उपलब्धता में सहयोग एवं सहायता प्रदान करने में भी उनका परिवार आवश्यक होता है।

"अभिभावकों को अपने बच्चों के शिक्षकों के साथ हर साल कम- से -कम दो बार और उससे अधिक बार मिलने के लिए कहा जाएगा ताकि वह अपने बच्चों की शिक्षा का को ट्रैक करने, प्रोत्साहित करने और उनका अनुकूलन करने में मदद कर सके। शिक्षक भी नियमित रूप से बच्चों के स्कूल की पढ़ाई, सीखने और प्रगति में अभिभावकों की भागीदारी को विकसित करने के प्रयास करेंगे। इसके लिए वे ऐसी वर्कशीट, गतिविधियां या असाइनमेंट देंगे, जो बच्चे घर पर अपने अभिभावकों की मदद से कर सकेंगे।"

(प्रारूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 पृष्ठ 81)

*** बच्चों की शिक्षा में माता-पिता एवं परिवार को जागरूक करने तथा उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु सुझाव-**

बच्चों की शिक्षा के अंतर्गत उनके माता-पिता को कैसे जागरूक किया जाए, और उनकी भागीदारी को कैसे सुनिश्चित किया जाए इसके मुख्य सुझाव किस प्रकार हैं-

१- बच्चे की शिक्षा में माता पिता और परिवार को जागरूक करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जाए ।

२-बच्चे की अच्छी शिक्षा के लिए विद्यालय, माता पिता और परिवार के बीच परस्पर समन्वय एवं सहयोग स्थापित किया जाए।

३- बच्चों की उचित शिक्षा के संदर्भ में शिक्षक, अभिभावक मीटिंग में उनकी आवश्यकता और महत्व को नए तरीके से समझाया जाए और बच्चों माता-पिता की सहभागिता को अनिवार्य करना चाहिए।

"स्कूल को ऐसी संभावनाएं अवश्य तलाश करनी चाहिए जिसमें शिक्षण की प्रक्रिया में अभिभावकों और समुदाय को शामिल किया जा सके। इस रिश्ते से संस्थागत अधिगम की विषय वस्तु और शिक्षण विधि में मिलजुल कर काम करने में मदद मिलेगी।"

(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पृष्ठ 100)

४-विद्यालय के वार्षिक कार्यक्रमों में बच्चों के माता-पिता को भी आमंत्रित किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षक और माता-पिता के बीच की दूरी कम की जा सके।

५-विद्यालय में ऐसे कार्यक्रम आयोजित करवाए जाने चाहिए जिन के माध्यम से बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में माता-पिता एवं उनके परिवार को उनके कर्तव्य से परिचित कराया जाए और उनमें उत्तरदायित्व की भावना को जागृत किया जाए।

६- माता-पिता अपने अनुभव अनुभवों को विद्यालय एवं अध्यापकों से साझा करें ताकि उनके अनुभवों का प्रयोग करके बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में शिक्षक लाभ उठा सकें।

७- विद्यालय में होने वाले वाद-विवाद, समस्याओं में विद्यालय और माता-पिता को साथ होने चाहिए और शिक्षा में आने वाली समस्याओं एवं सुधार के लिए माता-पिता से परामर्श और आपसी समन्वय एवं सहयोग को सुनिश्चित किया जाए।

"विद्यालय में पैदा होने वाली समस्याओं और विवादों के प्रति अभिभावकों और अध्यापकों को शांति का रुख अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।"

(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 25 शांति के लिए शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र 3.4 पृष्ठ 33)

८- बच्चों में विभिन्न प्रकार के नैतिक मूल्यों के विकास तथा शांति के लिए तथा बच्चों की शिक्षा के लिए माता-पिता अथवा संरक्षकों की भूमिका को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

"शांति की शिक्षा देने के लिए अध्यापकों और अभिभावकों की कार्यशाला आयोजित की जाएं तथा अभिभावक अध्यापक संबंधों को स्थापित एवं मजबूत करना

(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005,'शांति के लिए शिक्षा' राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र 3.4 पृष्ठ 33)

*** घर में ही शिक्षा की व्यवस्था का प्रावधान -**

गंभीर दिव्यांगता और गहरी विकलांगता वाले बच्चे जो स्कूल नहीं जा पाते, उनके लिए घर पर ही शिक्षा की व्यवस्था की जाएगी जिससे वह एन आई ओ एस (NIOS) जैसी सुविधा के जरिए स्कूली शिक्षा पूरी कर सकें। प्राथमिकता इस बात की होगी कि माता-पिता/ देखभाल- कार्यकर्ताओं का अभिमुखीकरण हो और व्यापक स्तर पर पठन-पाठन सामग्री का प्रसार किया जाए जिससे माता-पिता / देखभाल-कर्ता बच्चों की शैक्षणिक जरूरतों को पूरा करने में सहायक हो सके। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों सी. डब्ल्यू.एस.एन. के लिए समावेशी शिक्षा की कार्यक्रम सी. डब्ल्यू. एस. एन.के लिए बने

संसाधन केंद्र और इच्छुक गैर-सरकारी संस्थाएं (एन.जी.ओ.) और स्वयंसेवी संगठनों के साथ साझेदारी में क्रियान्वित किए जाएंगे। समावेशी शिक्षा, जागरूकता कार्यक्रम, सामुदायिक लामबंदी सी.डब्ल्यू.एस.एन. की त्वरित पहचान और आकलन के कार्य में स्थानीय संसाधन केंद्रों एन.जी.ओ. को शामिल किया जाएगा।

(प्रारूप शिक्षा नीति- 2019, 8.6 पृष्ठ- 215)

*** प्रारूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 के संदर्भ में अभिभावकों की भागीदारी का महत्व -**

कई शैक्षिक अनुसंधान बच्चों की शिक्षा पर घर के वातावरण के महत्वपूर्ण प्रभाव की ओर इशारा करते हैं । अभिभावकों की साक्षरता, संख्याज्ञान या शैक्षिक स्थिति की परवाह किए बिना उनके बच्चों को सिखाने को अनुकूलित करने में उनका सहयोग काफी महत्वपूर्ण है। अभिभावकों को अपने बच्चों के शिक्षकों के साथ हर साल कम से कम दो बार और उनसे भी अधिक बार मिलने के लिए कहा जाएगा ताकि वह अपने बच्चों की शिक्षा को ट्रैक करने,प्रोत्साहित करने और उनका अनुकूलन करने में मदद कर सकें। शिक्षक भी नियमित रूप से बच्चों के स्कूल की पढ़ाई, सीखने और प्रगति में अभिभावकों की भागीदारी को विकसित करने के प्रयास करेंगे। इसके लिए वे ऐसे वर्कशीट, गतिविधियां देंगे जो बच्चे घर पर अपने अभिभावकों की मदद से कर सकेंगे ।

(प्रारूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 12, पृष्ठ-81 )

*** प्रारूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 के संदर्भ में अभिभावकों की भागीदारी का महत्व –**

कई शैक्षिक अनुसंधान बच्चों की शिक्षा पर घर के वातावरण के महत्वपूर्ण प्रभाव की ओर इशारा करते हैं । अभिभावकों की साक्षरता, संख्याज्ञान या शैक्षिक स्थिति की परवाह किए बिना उनके बच्चों को सिखाने को अनुकूलित करने में उनका सहयोग काफी महत्वपूर्ण है। अभिभावकों को अपने बच्चों के शिक्षकों के साथ हर साल कम से कम दो बार और उनसे भी अधिक बार मिलने के लिए कहा जाएगा ताकि वह अपने बच्चों की शिक्षा को ट्रैक करने,प्रोत्साहित करने और उनका अनुकूलन करने में मदद कर सकें। शिक्षक भी नियमित रूप से बच्चों के स्कूल की पढ़ाई, सीखने और प्रगति में अभिभावकों की भागीदारी को विकसित करने के प्रयास करेंगे। इसके लिए वे ऐसे वर्कशीट, गतिविधियां देंगे जो बच्चे घर पर अपने अभिभावकों की मदद से कर सकेंगे।

(प्रारूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 12, पृष्ठ–81)

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कह सकते है कि शिक्षा ही बच्चों को सभ्य एवं समझदार बना बनाती है तथा उज्जवल भविष्य के लिए तैयार करती है और इस कार्य में उनके माता – पिता एवं परिवार की भूमिका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष किसी भी प्रकार से हो सकती है। बच्चों की शिक्षा में माता-पिता एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करते हैं और यही कार्य बच्चों के जीवन में उनकी शिक्षा, चरित्र एवं भविष्य को उज्जवलता प्रदान करता है ।उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर आधुनिक शिक्षा में माता–पिता और उनके परिवार की भूमिका होना सुनिश्चित है क्योंकि बच्चों की प्रथम पाठशाला उनका परिवार ही होता है।

## संदर्भ –

*-भारत सरकार, निशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009,

*-___ नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन 1986 (1992) में संशोधित, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

*- रा. शै. अ. प्र.प 2010 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पाठ्यचर्या– पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार– पत्र राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली ।

*-___2010 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पृष्ठ संख्या 99 -100 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली।

*-____ 2010 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 शांति के लिए शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार– पत्र 2005 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।